International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति, समस्याऐं एंव उनका समाधान–वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में।

लेखक – डॉ0 मंजू सांगवान, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग।

महिला महाविद्यालय झोझूकंला, चरखी दादरी।

सारांश – वर्तमान समय में महिलाएं केवल घरेलू कार्य तक ही सीमित नहीं रह गई है। अब वह अपने घर–परिवार को संभालने के साथ साथ बाहरी दुनिया से जुड़कर कार्य स्थल पर भी अपना हुनर दिखा रही है। अब महिलाएं मात्र स्कूल व कॉलेजों में कार्य करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कारखाने, उद्यौग धंधों, राजनीति, प्रशासन तथा न्यायालयों आदि अन्य व्यवसायिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रही है। नौकरी करने के कारण महिलाओं की स्थिति में काफी हद तक परिवर्तन देखने को मिलता है। वहीं दूसरी तरफ उनकी समस्याएं भी निरंतर बढ़ रही है। इन बढ़ती हुई समस्याओं का समाधान खोजना एक अत्यंत आवश्यक विषय बन गया है।

संकेत शब्द – महिला सशक्तिकरण, कामकाजी महिलाएं, स्थिति, महिला समस्या, समाधान।

प्रस्तावना – किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। महिलाओं की ऐतिहासिक स्थिति की तुलना में वर्तमान स्थिति में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। अब महिलाऐं पहले की तरह गृह कार्य, परिवार की देखरेख और चार दिवारी तक ही सीमित नही है। अब महिलाऐं घर परिवार की जिम्मेदारी निभाने के

साथ साथ घर से बाहर अपने कार्यस्थल पर भी अपना परचम लहरा रही है। वर्तमान में महिलाऐं पुरूषों के साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। वह अपना, अपने परिवार, देश व समाज का नाम रोशन कर रहीं है। महिलाऐं स्कूल कॉलेजों से लेकर उद्योग धंधें राजनीति व अन्य व्यवसायों में अपनी सेवाऐं दे रही है। वर्तमान में महिलाऐं विमान तक उड़ने में सक्षम हो चुकी है। महिलाऐं किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नही रह गई है। आज महिलाऐं ना सिर्फ घरेलू कार्य तक सीमित है बल्कि राष्ट्रपति के पद तक भी आसीन हो चुकी है। वह हर क्षेत्र में आगे बढ़कर जैसे विमान चालककर्ता के रूप में कार्य कर देश को गौरवान्वित महसूस करवा रही है। आज भारत देश की बेटियाँ ना सिर्फ भारत देश में बल्कि विदेशो में भी अपना परचम लहरा रही है। महिलाऐं दिन प्रतिदिन समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर रही है। लेकिन महिलाऐं जितनी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही है उनको उतना अधिक चुनौतियों का सामना करना पडता है। उनके घरेलू व बाहय दोनों तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उनको अपने घर परिवार के साथ साथ कार्यस्थल पर भी ठीक से संतुलन बनाकर चलने की जरूरत होती है।

उद्देश्य – 1. कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका निभाने के कारण उत्पन्न अन्तद्वन्द्वों की स्थिति को ज्ञात करना व समस्याओं का समाधान करना।

2. कार्यरत महिलाओं के बच्चों के पालन–पोषण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

कामकाजी महिलाओं की समस्याऐं – 1. समय के अभाव के कारण अपने बच्चों व परिवार को अधिक समय न दे पाना ।

2. कामकाजी महिलाओं के बढ़ते मानसिक तनाव की समस्या।

3. कामकाजी महिलाओं के बढ़ते शारीरिक तनाव की समस्या।

4. कार्यस्थल पर शोषण की समस्या।

5. कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव की समस्या।

6. कार्यस्थल पर समय पर आने व जाने की समस्या।

7. कामकाजी महिलाओं के आवास की समस्या।

8. कामकाजी महिलाओं के पास स्वंय के लिए समय के अभाव का होना।

9. समानता और सामंजस्य की समस्या।

10. स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं।

महिलाओं की समस्याओं का समाधान – 1. घरेलू कार्यों में पुरूषों को महिलाओं के साथ मिलकर काम में हाथ बंटाना चाहिए।

2. घर से बाहर जैसे ऑफिस, परिवहन के साधन इत्यादि की व्यवस्था काफी सुरक्षित होनी चाहिऐ।

3. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोप्साहित करना चाहिऐ।

4. महिलाओं को ड्राईविंग सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई जाऐ ताकि उनको कार्यस्थल पर पहुंचने के दौरान समस्याओं का सामना ना करना पड़े।

5. महिलाओं की जैविक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर छुट्टियों की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए।

साहित्य की समीक्षा – 1. सुधीर कुमार श्रीवास्तव (1985) ने महिला सशक्तिकरण में महिलाओं की भूमिका नामक अपने अध्ययन में बताया है कि महिलाऐं तभी सशक्त हो सकती है जब शिक्षा के माध्यम से जगरूकता लाई जाऐ।

2. ए. आर. आर. श्रीवास्तव (2001) ने अपने अध्ययन द्वारा उतरप्रदेश में अनुसूचित जातियों के वर्तमान स्थिति में यह बताने का प्रयास किया, की जब तक जनमानस के विचारों व मनोवृतियों में अपेक्षित बदलाव नहीं आएगा, तब तक अनुसूचित जातियों पर अत्याचार की समस्याओं का स्थाई समाधान संभव नहीं है।

3. एल. दुबे व आर. पटरीवारा (1990) ने कार्यरत महिलाओं के परिवार की सरंचना तथा परिवार का इन महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण से सम्बन्धित विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

4. मीनाक्षी व्यास (2002) ने अपने अध्ययन में मध्यम व निम्न वर्गीय स्त्रियो की पारिवारिक स्थिति, में बताया कि महिलाओं की शिक्षा और

स्वास्थय, रोजगार, के मामले में लिंग संबंधी अड़चनें दूर करना और लोकतंत्र में महिलओं की पूर्ण भागीदारी पर अवश्य ध्यान देना चाहिऐ।

5. त्रिवेदी (2010) के अध्ययन के अनुसार भारतीय महिलाऐं जब घर से बाहर कार्य करने को निकलती है तो पारंपरिक रिति–रिवाज में रहने के बाद भी उसे कई तरह की प्रताड़नाओं एंव हिंसाओं का सामना करना पड़ता है।

6. हरद मैन (2003) के अध्ययन के अनुसार घरकी जिम्मेदारी के साथ–साथ बच्चों का पालन पोषण भी महिलाओं का पहला दायित्व समझा जाता है तथा अर्थोपार्जन के लिए भी उसे प्रेरित किया जाता है। जिसके कारण महिलाऐं हमेशा तनाव की स्थिति में रहती है और घर से लेकर कार्यस्थल तक उन्हें कई तरह की प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है।

कामकाजी महिलाओं के जीवन से संबंधित समस्याओं व दोहरी भूमिका के दबाव होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि महिला का अपने पैरों पर खड़ा होकर आत्मनिर्भर बनने के उसके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़े है। आधुनिक युग की नारी ने शिक्षा का महत्व समझा हैं तथा अनेक बाधाओं का सामना करते हुए वह शिक्षा ग्रहण करती है तथा शिक्षा को उपयोगी बनाने हेतु यथासंभव कोई न कोई नौकरी अवश्य कर रही है। पुरूषों के समान ही महिला द्वारा नौकरी करना समय की मांग है। आत्मनिर्भर बनकर आत्म सम्मान का जीवन जीने की इच्छा, भौतिक समृद्धि की महत्वाकांक्षा, बच्चे व परिवार का बेहतर जीवन मुहैया कराना, ग्रहण की गई शिक्षा व प्रशिक्षण को सार्थक बनाने हेतु रहन सहन के बढ़ते स्तर को

बरकरार रखने तथा प्रगति की नई ऊंचाईयों तक पहुंचने की चाहत, बढ़ती महंगाई की मार व सामाजिक प्रतिष्ठा तथा पति के साथ कदम मिलाकर चलने का गर्व आदि कारणों ने महिलाओं को पुरूषो के समान वेतन भोगी कार्य करने को प्रेरित किया जिससे कि उसे दूसरों पर निर्भरता या घर की चारदीवारी में सिमटी जिंदगी से आजादी मिल सके।

निष्कर्ष – शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला हैं कि कामकाजी महिलाऐं दोहरे दायित्व को निभाने के कारण मानसिक रूप से काफी अधिक प्रभावित होती है। जब कामकाजी महिलाऐं कार्यस्थल पर जाती हैं तो वह अपने बच्चों की देखरेख और सुरक्षा को लेकर अत्याधिक फिक्रमंद रहती है। वह कार्यस्थल पर अधिक व्यस्त रहने और समय के अभाव के कारण अपने परिवार व बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाती है। महिलाओं की दोहरी भूमिका उनके शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की थकान का कारण बनता है। इसलिए पुरूषों को भी घरेलू उतरदायित्वों के निर्वहन में अवश्य सहभागिता निभानी होंगी तभी महिला सशक्त सार्थक बन सकेगी।

संदर्भ – 1. डॉ0 आर. कुमारी (2020) 'कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति एक अध्ययन' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ होम सांइस 2020:6(3)402–404

2. पंवार, आर. (2017) 'कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का एक समाजशास्त्री अध्ययन' शोध मंथन आर्टिकल न0 20 (एस.एम.459)

3. एन.रूवाली प्रियंका, कु. वंदना, 'कामकाजी महिलाओं की परिस्थिति एंव समस्याओं एंव समाजशास्त्री अध्ययन' जनरल ऑफ आचार्य नरेंद्रदेव रिसर्च इंस्टिट्यूट।

4. सिंह, अजय कुमार महिला सशक्तिकरण की नई परिभाषा, योजना जून 2012, योजना भवन नई दिल्ली।

5. वर्मा, अंजलि, भारत में कार्यशील महिलाऐं ओमेना पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6. कपूर, प्रमिला, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एंड सन्स नई दिल्ली।

7. कुमार, राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

8. कुमारी, संगीता, कामकाजी महिलाऐं समस्या एंव समाधान (वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च, 2020:6(10)